अध्याय 8

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय 1 से 6 तक शोधार्थी ने अनुसंधान की समस्या, आवश्यकता, पार्श्वभूमी, कुल अनुसंधान का परिचय तथ्य, संकलन आदि चित्रों का वर्णन किया है। जिस प्रकार अनुसंधान के अंतिम चरण में शोधार्थी अपने निष्कर्ष तक पहुँचते हैं, उसी तरह अपने उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं की खोज करने के बाद शोधार्थी अपने निष्कर्ष तक पहुँचा है।

इस अनुसंधान कार्य में शोधार्थी ने सर्वेक्षण पद्धती का उपयोग कर अपने अध्ययन विषय में सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी इस विषय पर अनुसूची, साक्षात्कार अवलोकन के माध्यम से तथ्य संकलन कर उसका सांख्यिकीय विश्लेषण किया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अनुसूचिज जाति और सामान्य वर्ग के बीच जो सामाजिक दूरी पाई जाती है, उसकी खोज की गई है।

8.1 परिकल्पनाओं का परीक्षण

शोधार्थी ने अपने अनुसंधान कार्य को एक दिशा प्रदान करने के लिए कुछ परिकल्पनाएँ दी थीं, वे परिकल्पनाएँ एवं उनका परीक्षण इस प्रकार है :

परिकल्पना 1 **No1:-** सामान्य वर्ग में आने वाली जाति-उपजातिओं के बीच सामाजिक दूरी है। ।

Na1:- सामान्य वर्ग में आने वाली जातिउपजाति के बीच सामाजिक दूरी नहीं है।

(1) सामान्य वर्गों के अंतर्गत सामाजिक दूरी सारणी

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल
ब्राह्मण	10	08	06	01	02	04	04	35
राजपूत	01	-	-	01	02	13	08	25
वैश्य	03	-	-	17	02	00	06	28
जैन	06	12	14	01	14	03	02	52
कुल	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**140**

सामान्य वर्गों के अंतर्गत सामाजिक दूरी सारणी को विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष दिखाई देता है कि कुल सामान्य वर्ग में ब्राह्मण में अधिक समीपता दिखाई देती है। उसके बाद जैन से अधिक समीपता दिखाई देती है। वहीं दूसरी तरफ सबसे ज्यादा सामाजिक दूरी राजपूत से दिखाई देती है। मतलब यहाँ

सामान्य वर्गों के अंतर्गत सामाजिक दूरी दिखाई देती है। यह परिकल्पना सही साबित होती दिखाई देती है।

परिकल्पना 2 No2: अनुसूचित जाति में आने वाली जाति-उपजाति के बीच सामाजिक दूरी है।

Na2:- अनुसूचित जाति में आने वाली जाती-उपजाति के बीच सामाजिक दूरी नहीं है।

(2) अनुसूचित जाति में आने वाली जाति-उपजाति के बीच सामाजिक दूरी सारणी

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल
बौद्ध	05	10	05	10	05	05	02	42
मातंग	02	03	04	01	00	05	12	27
चमार	01	02	01	00	05	07	05	21
महार	12	05	10	09	10	03	01	50
कुल	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**20**	**140**

अनुसूचित जाति के अंतर्गत सामाजिक दूरी सारणी का विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि कुल अनुसूचित वर्गों में सबसे अधिक समीपता महार से दिखाई देती है। उसके बाद बौद्ध से। वहीं सबसे अधिक सामाजिक दूरी की बात करें तो मातंग समाज से सबसे अधिक सामाजिक दूरी दिखाई देती है। इसका

यह स्पष्ट अर्थ है कि जो परिकल्पना शोधार्थी द्वारा दी गई थी 'अनुसूचित जाति के अंतर्गत सामाजिक दूरी है' वह सही साबित होती है।

परिकल्पना 3 No3:- सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी है

Na3:- सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी नहीं है

(3)सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी सारणी

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल
बौद्ध	10	13	17	14	16	05	03	78
मातंग	00	00	02	02	01	19	19	43
चमार	05	10	04	01	05	15	17	57
महार	20	17	17	23	18	01	01	97
कुल	**35**	**40**	**40**	**40**	**40**	**40**	**40**	**275**

सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी सारणी का विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष दिखाई देता है कि शोधार्थी ने जो परिकल्पना की थी वह परिकल्पना सत्य दिखाई देती है। क्योंकि सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी सारणी में सबसे अधिक समीपता महार से दिखाई देती है

और सबसे अधिक सामाजिक दूरी मातंग से दिखाई देती है। इसका मतलब सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति के बीच सामाजिक दूरी पाई जाती है।

परिकल्पना 4 **No4**:- अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग में सामाजिक दूरी है।

Na4:- अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग में सामाजिक दूरी नहीं है।

(4)अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग के बीच सामाजिक दूरी सारणी

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल
ब्राह्मण	16	15	13	10	11	03	07	75
राजपूत	02	04	01	02	02	19	19	49
वैश्य	06	15	07	18	15	09	10	70
जैन	16	16	19	10	12	09	04	86
कुल	**40**	**40**	**40**	**40**	**40**	**40**	**40**	**280**

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग के बीच सामाजिक दूरी के अध्ययन में ब्राह्मण और जैन से अनुसूचित जाति के अधिक समीप संबंध दिखाई देते हैं। वहीं सबसे ज्यादा सामाजिक दूरी सामान्य वर्ग के राजपूत से दिखाई देती है। इससे यह स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने जो परिकल्पना अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग के बीच सामाजिक दूरी है N0 यह परिकल्पना सही साबित हुई दिखाई देती है।

8.2 सामाजिक दूरी के कुछ कारण

शोधकर्ता को अपने अध्ययन के दौरान अवलोकन, साक्षात्कार और सामूहिक चर्चा करते समय कुछ सामान्य कारण दिखाई दिए, उसमें शैक्षणिक कारण, राजकीय कारण, धार्मिक तौर पर, व्यवसाय के तौर पर, आर्थिक कारण, पूर्वाग्रह की वजह से, इत्यादी कारणों से आधुनिक समाज में आज भी सामाजिक दूरियाँ पाई जाती है।

8.2.1 <u>शैक्षणिक कारण :</u>

वर्धा शहर का शैक्षणिक स्तर जनगणना 2001 के अनुसार 88.6, एवं जनगणना 2011 के अनुसार 93.1 तक है। पर इस स्तर में सिर्फ उच्चवर्णीय लोग ही ज्यादा पाए जाते हैं, जिन्हें हम सवर्ण वर्ग भी कहते हैं। अभी तक पूर्णरूप से लोग शिक्षिज्ञत नहीं है और इसी कारण पारंपरिक पद्धति से लोगों के मन में जो अनुसूचित जाति के बारे में पूर्वाग्रह है उसी वजह से सामान्य वर्ग और अनुसूचित जाति में सामाजिक दूरियाँ अधिक पाई जाती है।

8.2.2 धार्मिक कारण

सामाजिक दूरी में धार्मिक कारण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्योंकि इतिहास देखा जाए तो अछूत लोगों को कोई भी धर्म का कार्य करने का तथा मंदिर में प्रवेश निषेध था। सामान्य वर्ग के कोई भी धार्मिक कार्य में अनुसूचित वर्ग को प्रवेश नहीं दिया जाता था यहाँ तक कि उन्हें गाँव में रहने तक की मनाई थी। इसी पूर्वाग्रह को लेके आज भी समाज में सामाजिक दूरियाँ पाई जाती हैं।

8.2.3 राजनितिक कारण

सामाजिक दूरियाँ बनाने में राजनैतिक कारण भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक जगत में देखा गया है कि धर्म-जाति को लेके विभिन्न राजनैतिक पक्ष बनाए गये हैं। हर एक पक्ष अपने लोगों के परिप्रेक्ष में अधिक ज्यादा पाए जाते हैं। वहीं दूसरे धर्म तथा जाति के पक्ष में ये लोग नहीं होते। कुछ इस तरह की बातें वर्धा शहर में भी दिखाई देती है और इसी कारण लोगों में सामाजिक दूरी दिखाई देती है।

8.2.4 व्यावसायिक कारण

पूर्वकाल से ही अनुसूचित जाति के व्यवसाय, काम-धंधे, गंदे तथा अशुद्ध होने के कारण सवर्ण या सामन्य वर्ग के लोग अनुसूचित जाति के लोगों से कोई भी संबंध बनाना पसंद नहीं करते। वहीं हम देखते हैं कि शिक्षा का स्तर बढ़ते जा रहा है, हर काम को हम शुद्ध रूप से देखने की बातें करते हैं। फिर भी हमें व्यावसायिक रूप से सामान्य वर्ग और अनुसूचित वर्ग में सामाजिक दूरियाँ दिखाई देती हैं।

8.2.5 आर्थिक कारण

अनुसूचित जातियों में कुछ लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह लोग गलिच्छ बस्ती करके रहते हैं और सामान्य वर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण वह लोग साफ-सुथरी जगह में रहते हैं। इसी कारण सामान्य वर्ग के लोग अनुसूचित वर्ग से कोई भी संबंध बनाना पसंद नहीं करते और इसी कारण सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित वर्ग में सामाजिक दूरियाँ पाई जाती है।

8.2.6 पूर्वाग्रह दूषित

आज आधुनिक समाज में जो लोग अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन लोगों ने मन में कुछ पुरानी बातों को लेकर अनुसूचित वर्ग के बारे में अपने ही कुछ विचार बना लिए हैं जैसे इतिहास के पन्नों को पलटकर देखा जाए तो अनुसूचित वर्ग के लोगों को अछूत कहा जाता था जो लोग गाँव के बाहर बस्ती करके रहते थे, जो लोग कुड़ा-कचरा उठाने, मृत पशुओं को ढोने इत्यादि कार्य करते थे, इन लोगों को गाँव में तथा मंदिर में प्रवेश नहीं था। इसी कारण लोगों ने अनुसूचित वर्ग के बारे में अपने पूर्वाग्रह दूषित कर लिए हैं और यह एक कारण भी लोगों के बीच सामाजिक दूरी पैदा करता है।

8.2.7 सांस्कृतिक कारण

सांस्कृतिक तौर पर देखा जाए तो खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, पहराव इत्यादि में सामान्य वर्ग और अनुसूचित वर्ग में अंतर दिखाई देते हैं क्योकि खान-पान के बारे में अगर बात करें तो अनुसूचित लोगों के खान-पान में मांस खाना, मद्य पीना आदि पाया जाता है और अधिकतर सामान्य वर्ग के लोगों में शाकाहारी खाना खाया जाता है। इसी कारण अनुसूचित वर्ग तथा सामान्य वर्ग में सामाजिक दूरियाँ पाई जाती है।

8.3 सुझाव

शोधार्थी ने इस विषय पर अध्ययन करने के बाद समाज में जो सामाजिक दूरियाँ देखी उन दूरियों को कम करने हेतु कुछ सुझाव दिए हैं जो इस तरह है :

8.3.1 शिक्षा का स्तर बढ़ाया जाए

शोधार्थी को यह लगता है अगर शिक्षा का स्तर पूरा कर दिया जाए और सभी वर्ग के लोगों को शिक्षा दी जाये तो लोगों के विचारों में परिवर्तन आ सकता है। पहले से पूर्वाग्रह बनाकर चल रहे लोगों को वास्तविकता का ज्ञान होगा। इन सभी समस्याओं को मिटाने का यह एक अच्छा प्रयास हो सकता है और इस तरह समाज में जो सामाजिक दूरियाँ देखी गई है उसे भी कम किया जा सकता है।

8.3.2 सामूहिक विवाह के माध्यम से

आज ज्यादातर सामूहिक विवाह होते हैं पर ऐसे सामूहिक विवाह में अपने ही वर्ग के लोगों को एकत्र कर उनसे विवाह किए जाते हैं। अगर इस सामूहिक विवाह को विभिन्न जाति के लोगों का सामूहिक विवाह किया जाए तो समाज में पाई जाने वाली सामाजिक दूरियाँ मिट सकती है। सरकार ने इसे प्रोत्साहन देना चाहिए।

8.3.3 आरक्षण के माध्यम से

आज देखा जाए तो भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों को जो आरक्षण प्रदान किया है उस वजह से सामान्य वर्ग के लोग अनुसूचित वर्ग से नफरत करते हैं या फिर हम यह भी कह सकते हैं कि अनुसूचित वर्ग के आरक्षण को लेकर उनके मन में जलन की भावना रहती है। अनुसूचित जाति और सामान्य वर्ग में सामाजिक दूरी का एक यह कारण भी दिखाई देता है। अगर सरकार सामान्य वर्ग को भी कुछ प्रतिशत आरक्षण बढ़ा दे तो सामान्य वर्ग और अनुसूचित वर्ग में जो सामाजिक दूरियाँ बढ़ रही है उसे कुछ हदतक कम किया जा सकता है।

8.3.4 अंर्तजातीय विवाह को अधिक प्रोत्साहन दिया जाए

भारत सरकार की तरफ से अभी-भी अंर्तजातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पर कुछ ऐसे लोग है जिन्हें इस प्रोत्साहन का कुछ फायदा नहीं हो रहा है जैसे अगर अंर्तजातीय विवाह किया तो सरकार इसे मान्यता दे रही है, मगर आर्थिक सहायता नहीं दे रही है। जिस तरह सरकार अंर्तधर्मिय को विवाह करने के बाद आर्थिक सहायता प्रदान करती है अगर उसी प्रकार अंर्तजातीय विवाह में भी इस तरह का आर्थिक प्रोत्साहन सरकार की तरफ से दिया जाए तो सामाजिक दूरियाँ कम हो सकती है।